मनोज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 16 मूल्य 16.00
ड्राक्युला आया
मौत लाया
fenzz
इस
कॉमिक्स
विशेषांक के साथ
मैग्नेट स्टीकर
मुफ्त
KADAM
KAKAJI

ड्राक्यूला आया मौत लाया
कथानक: नाजरा खान
चित्रांकन: दिलीप कदम, उमाकांत कानडे
पाताल लोक का सम्राट माण्डूका...
fenzz
... जिसके राज्य में पाताल की प्रजा अमन व चैन की जिन्दगी गुजार रही थी।
लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह शान्ति भंग कर देना चाहते हैं।
तुम तीनों तैयार हो!
हां महान स्वामी!
ठीक है। चलने की तैयारियां करो। यदि भाग्य ने साथ दिया तो आज के बाद पाताल लोक के राजा हम होंगे।
D. L. TEX FAB. SURAT

कुछ देर बाद पाताल लोक के राजमहल के बाहर–
तुम तीनों जाकर प्रहरियों को ठिकाने लगाओ। कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिए।
आप चिन्ता मत कीजिए स्वामी। अजगरा की अजगर मार से कोई नहीं बचेगा।
विषाकु का विषवार किसी को चीखने का अवसर नहीं देगा।
खड्ग अपनी खड्ग से आपके तमाम दुश्मनों का सिर कुचल डालेगा।
शाबाश! चलो!
अंधेरे का लाभ उठाते हुए आगे बढ़े चारों...
...और बेखबर रक्षकों पर मौत बनकर टूट पड़े।
खच
आह!
आह! हाय!
खच

कुछ ही पलों में-

सब खत्म हो गए स्वामी!

शाबाश! अब सम्राट माण्डूका की बारी है।

चारों दनदनाते हुए महल में घुस गये-

द्वार की ओर मुड़ते ही दोनों चौंक उठे।
ओह! शत्रु!
!!!
ओह। तो राजकुमार रणकुम्भा भी यहीं है। चलो, बाप-बेटे दोनों एक साथ परलोक सिधारेंगे।
समाप्त कर दो दोनों को।
तीनों ने किया एक साथ अपनी शक्ति का प्रहार।
लेकिन राजकुमार रणकुम्भा न केवल उन तीनों से बचा...
... बल्कि उन पर वार भी कर दिया—
मुझे मारना इतना आसान नहीं है दुष्टो!
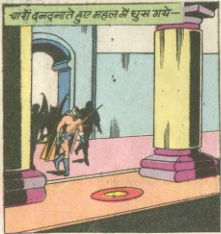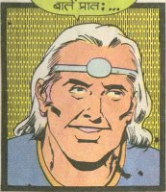
छपाक
आऽऽऽ
अपने साथी की मौत देख दहाड़ उठे विषाकू व अजगरा।
हम तुझे जीवित नहीं छोड़ेंगे रणकुम्भा!
मौत तेजी से रणकुम्भा की ओर बढ़ी...
...लेकिन राजकुमार रणकुम्भा तक पहुंच नहीं पाई।
क्योंकि उसे बीच में नष्ट हो जाना पड़ा।
मेरे होते, मेरे पुत्र पर कोई आंच नहीं आ सकती दुष्टो!
आोह!
ओह! तुझे तो हम भूल ही गये थे। तुझे भी तो मारना है!
इसी के साथ हवा में लहराये विषाकू और अजगरा के शरीर...

...और जा दबोचा माण्डूका व रणकुम्भा को।
मेरा विष-वार तुम्हारी हड्डियां तक गला देगा।
ओह!
उफ!
लेकिन अगले पल—
अपनी मृत्यु की चिंता कर दुष्ट!
तेरा विषवार ही आज तेरी मृत्यु का कारण बनेगा दुष्ट!
आऽऽऽ
भच्चाक
विषाक् का विषवार ही मौत बन गया उसके लिए।
रणकुम्भा भी पीछे नहीं रहा था।
बहुत नाज है ना तुझे अपनी इस पूंछ पर!
आऽऽऽ
आज इसे उखाड़कर ही फेंकूंगा!
खड़ाक
भच्चाक

अब बचा था वह रहस्यमय नकाबपोश, जिसे घेरे खड़े थे मारुका और रणकुम्भा -
अब तेरी बारी है दुष्ट! मरने को तैयार हो जा!

ठहरिये पिताजी! पहले इस दुष्ट का चेहरा तो देख लीजिये!

आगे बढ़ा रणकुम्भा और -
चर्रर्र...

उस नकाबपोश का चेहरा देख उछल पड़े थे दोनों

चाण्डुका, तुम?
चाचाजी, आप?

तुम मेरे सगे भाई होकर मेरी हत्या करने आये थे?
वो... वो... भइया...!

खामोश! जो हमें भइया कहकर पुकारा।
चटाख

दफा हो जाओ यहां से! यदि आज के बाद तुम राज्य में नजर आये तो हम भूल जाएंगे कि तुम हमारे भाई हो।

ओह!

कुछ देर बाद, चाण्डका सिर झुकाये पाताल लोक से बाहर जा रहा था।
अभी वह कुछ ही दूर गया था कि अचानक—
मित्र चाण्डका!
कौन?
जैसे ही चाण्डका पीछे पलटा—
बुकाला तुम?
हाँ मित्र; अच्छा हुआ तुम यहीं मिल गए। मैं तुमसे ही मिलने जा रहा था...
...लेकिन तुम यहां कैसे?
बताता हूँ मित्र!
फिर चाण्डका ने उसे सारी बात बता दी।
पूरी बात सुनकर—
ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ!
हाँ मित्र! कुछ समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं!
चिन्ता मत करो मित्र, तुम्हारी इस समस्या का हल मेरे पास है...
...और हल भी ऐसा, जो तुम्हें इस लोक का सम्राट बना देगा!
मैं कुछ समझा नहीं!
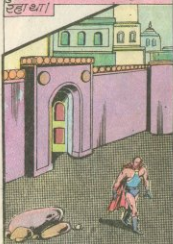
आओ मेरे साथ, सब समझ जाओगे।
तान्त्रिक बुकाला चाण्ड्का को लेकर अपनी गुफा में पहुंचा।
ये मनुष्य तुम्हारी समस्या का समाधान है चाण्ड्का।
क्या कह रहे हो बुकाला? यह अचेत व विकलांग मनुष्य भला मेरी क्या सहायता करेगा?
यह मनुष्य नहीं है मित्र, बल्कि मनुष्य के रूप में वह बला है जिसे पूरा पृथ्वीलोक...
...ड्राक्युला के नाम से जानता है।
ड्राक्युला! तुम्हारा मतलब यह वही शैतान है, जिसने पूरी पृथ्वी को मनुष्य-विहीन करने की कसम उठा रखी है?
हां। यह वही ड्राक्युला है।
ओह। लेकिन यह तुम्हें कहां मिला?
ड्राक्युला के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें दो महान कॉमिक्स: 'फिर आया ड्राक्युला' व 'ड्राक्युला का प्रेतजाल'

बताता हूं, सुनो
...कुछ दिन पहले मैं तुमसे मिलने महल की ओर जा रहा था कि अचानक...
...मैं उसे उठाकर अपनी गुफा में ले आया और जब उसका मस्तिष्क पढ़ा
ओह! यह मनुष्य यहां कैसे?
ओह! यह तो ड्राक्युला है। पृथ्वी की सबसे शक्तिमान पैशाचिक शक्ति।
मैं इसे अपने वश में रखूंगा। इसके बल पर कुछ भी किया जा सकता है।
...और आज वह दिन आ गया है, जब ड्राक्युला के बल पर तुम पाताल लोक के राजा बन सकते हो।
मैं मानता हूं बुकाला, यह बहुत शक्तिशाली है। लेकिन ये मेरी क्या सहायता करेगा!
कर सकता है, लेकिन इसके लिए मुझे तुम्हारी और ड्राक्युला की शक्तियां एक करनी होंगी।
मतलब?
मतलब यह कि तुम्हें ड्राक्युला की आत्मा को अपने शरीर में प्रवेश करवाना होगा...

इससे ड्राक्युला की समस्त पैशाचिक शक्तियां तुम्हारे अंदर आ जाएंगी...
और तुम बन जाओगे पाताल की सबसे शक्तिशाली शक्ति!
ओह!
लेकिन इस शक्ति को मेरे शरीर में प्रवेश कौन करायेगा?
यह काम मैं करूंगा!
आंखें चमक उठीं चाण्डूका की।
अगर तू यह काम कर देगा बुकाला, तो मैं तुझे सोने से लाद दूंगा!
मैं अभी तैयारी करता हूं!
कुछ ही क्षणों बाद—
हे महान ड्राक्युला, जागो! तुम्हें एक नया शक्तिशाली शरीर देने जा रहा हूं मैं।
आओ, अपना नया शरीर ग्रहण करो ड्राक्युला!
आआईईऽऽऽ
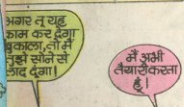
एक ही क्षण बाद —
हा..हा..हा!
शूं sss
ओsss
अपनी सफलता पर नाच उठा बुकाला —
हा... हा... हा...! मैं सफल हो गया! ड्राक्युला की आत्मा को नया शरीर दे दिया मैंने! हा... हा... हा...!
उधर एक भयानक परिवर्तन आ रहा था चाण्डूका में —
ओsss
अचानक बुकाला की आंखों में खुशी की जगह भय उतर आया!
अरे! य... ये तुम्हें क्या हुआ चाण्डूका?... तुम मेरी तरफ क्यों बढ़ रहे हो?
मूर्ख! मुझे चाण्डूका नहीं, ड्राक्युला बोल! ड्राक्युला!
यह शरीर चाण्डूका का जरूर है, मगर अब इसमें मेरा वास है!

और अब
मुझे चाहिए खून!
हा... हा... हा...!
ओह!
मौत को सामने देख...
... भागना चाहा बुकाला ने...
बचाओ ऽऽऽ
... लेकिन—
ड्राक्युला का
शिकार कभी बचता
नहीं है।
आऽऽऽ
क पल बाद ही ड्राक्युला बुकाला का खून पीने...
... और मांस खाने में व्यस्त था।
आहा! खून!
गर्म-गर्म खून!
मांस!
नर्म-नर्म
मांस!

देखते ही देखते बुकाला की हड्डियां तक चट कर गया था ड्राक्युला —
जीवित तो हो गया हूं मैं। अब सबसे पहले अपनी खोई हुई मणि ढूंढनी है मुझे। और इसके लिए मुझे खून पीकर पहले शक्ति अर्जित करनी होगी।
और यह काम इस लो की राजधानी में ही हो सकता है
कुछ देर बाद पाताल लोक की राजधानी में —
क्या कह रहे हो?
मैं सच कह रहा हूं महाराज। चाण्डूका भरे बाजार में निर्दोष प्राणियों का वध कर रहा है।
उस दुष्ट की यह हिम्मत! जाओ, खत्म कर दो उसे।
जो आज्ञा सम्राट!
कुछ देर बाद, चाण्डूका को मौत ने घेरा हुआ था।
साथियो, हमला करो! समाप्त कर डालो इस दुष्ट को।

हत्या करने आये हो तुम मेरी और मैं आया हूं...
...तुम्हारा खून पीने।
भच्चाक
अर्रऽऽ
रक्षकों को कोई भी मौका दिये बग़ैर चाण्डूका ने भयंकर नरसंहार मचा दिया वहां —
खच
खच
हा..हा.. हा..!
और जब इस संहार की सूचना पहुंची पाताललोक के राजमहल में —
उसकी हर शक्ति को मिटाकर रख दूंगा मैं।
उसका सिर लाकर राजधानी के चौराहे पर टांगेंगे हम!
क्रोध से फुफकारते बाहर निकले दोनों जांबाज...
आइये पिताजी!
तुझे जीवित छोड़ने की जो भूल हम कर चुके हैं, उसे अब तेरी मौत के साथ ही सुधारेंगे हम!
शीघ्र ही उन्होंने जा घेरा चाण्डूका को —
रुक जा दुष्ट!

हा..हा..हा..! मुझे अपना भाई चाण्डूका समझने की भूल मत कर मूर्ख माण्डूका। यह शरीर उसका जरूर है पर अब इस पर...
...पिशाच सम्राट ड्राक्युला का वास है।
और अब तुम दोनों बाप-बेटे को मारकर मैं पाताललोक का सम्राट बन जाऊंगा।
दुष्ट, तू जो भी हो, लेकिन बेगुनाहों का खून बहाकर जीवित नहीं बच सकता।
माण्डूका ने कर दिया अपनी शक्तियों का प्रहार —
लेकिन माण्डूका ड्राक्युला की शक्तियों से परिचित नहीं था।
शूं ऽऽऽ
ड्राक्युला की शक्तियां तेरी शक्तियों के साथ-साथ...
...तेरे विनाश का कारण भी बनेगी।
ठाक
ठाक
आई...ई ई...!
बुरी तरह घायल कर दिया ड्राक्युला की शक्ति ने माण्डूका को।

पने पिता का यह हाल देख रण-
म्भा क्रोध से चीख उठा।
दुष्ट! अब तू जीवित नहीं बचेगा। मेरी सूर्य शक्ति तेरी हड्डियों तक को जला देगी।
लेकिन ड्राक्युला द्वारा छोड़ी गई किरणों के प्रभाव से सूर्य शक्ति वापस जा टकराई रणकुम्भा से, फिर उसका भी वही अंजाम हुआ जो उसके पिता का हुआ था।
ई...ई...ई...!
ओह! बुरी तरह घायल हो गये हैं हम। ऐसे में इसका मुकाबला करना अपनी जान गंवाने के समान है।
समझदारी इसी में है कि पिताजी को लेकर यहां से भाग लिया जाए।
रणकुम्भा ने राजा माण्डू का के शरीर को उठाया...
...और वहां से अदृश्य हो गया।
न्हें भागता देख—
हा...हा...हा...! देख लो पाताललोक के वासियो, तुम्हारे रक्षक कैसे दुम दबाकर भाग गये!
fenzz

आज से पाताललोक का राजा मैं हूं। अगर किसी को आपत्ति हो तो बोलो।
भयातुर जनता ने फौरन उसे अपना सम्राट कबूल कर लिया।
हमें आप सम्राट के रूप में स्वीकार हैं।
स्वीकार हैं।
कुछ देर बाद पिशाच सम्राट ड्राक्युला विधिवत् बन चुका था पाताल सम्राट ड्राक्युला –
मैं पाताललोक का सम्राट तो बन गया हूं। अब अगर मेरी मणि मुझे वापस मिल जाये तो पहले पृथ्वीलोक और फिर देवलोक का भी स्वामी बन जाऊंगा मैं।
मुझे हर हाल में अपनी मणि प्राप्त करनी होगी।
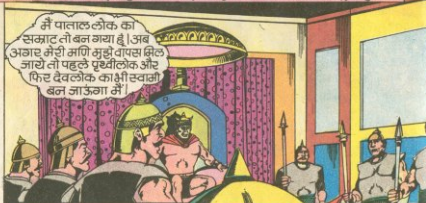
लेकिन मेरी मणि होगी कहां?
अतीत की यादों में खो गया ड्राक्युला!
पिछली बार त्रिकालदेव ने अपने दिव्यास्त्र से मेरा मणिवाला हाथ काटकर मणि मुझसे जुदा कर दी थी।
खच
आSSS
तब अपनी जान बचाने के लिए मैंने पाताल में शरण लेने की सोची थी।
अब मुझे ध्यान लगाकर देखना होगा कि मेरी मणि इस समय कहां है!
र पाताल लोक से बहुत दूर समुद्र में बसी इस विचित्र नगरी में—
अब आप इस मणि को देवता के मस्तक पर स्थापित कर दीजिए सम्राट!
जी, पुजारी जी!
लदेव
क्युला का मणि वाला हाथ काटे जाने की घटना के बारे में जानने के लिए पढ़ें— 'ड्राक्युला का प्रेतजाल'
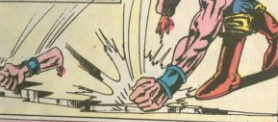
सम्राट समुद्रा ने मणि देवता के मस्तक पर स्थापित कर दी।
मणि स्थापित करने के बाद –
सम्राट, अभी तक आपने यह नहीं बताया कि यह मणि आपको मिली कहां से?
बताता हूं पुजारी जी! सुनिये, यह उस दिन की बात है जब मकर लोक की सेना ने हम पर हमला किया था...
... मकर सेना हमारी सेना पर प्रलय बनकर टूट रही थी...
खच
आई...ई...ई...!
खचाक
आऽऽऽ
शाबाश साथियो! समाप्त कर डालो सबको और कब्जा कर लो इस नगरी पर!
कचर
आई...ई...ई
कचर
आऽऽऽ
खच

...कर सेना के सामने हमारी सेना टिक न पाई और उसके पांव उखड़ गए ...
उफ! हमारे सैनिक भाग रहे हैं!
रुक जाओ! सामना करो शत्रुओं का!
...लेकिन हमारी चीख किसी ने न सुनी...
उफ! कोई नहीं रुका!
और ना ही कोई रुकेगा सम्राट, क्योंकि अपनी जान सभी को प्यारी होती है!
मकरराज, तुम?
...! अगर अब तू अपनी ...न बचाना चाहता ...तो मेरी दासता ...बूल कर ले!
मेरे जीते जी तेरी ये इच्छा कभी पूरी नहीं होगी!
तो ठीक है, तुझे अगर मौत ही पसन्द है तो यही सही!

...मकरराज की शक्तियां मौत बनकर बढ़ रही थीं मेरी तरफ...
ओह!
...कि तभी अचानक जाने कहां से मेरे और मकरराज की शक्तियों के बीच में आ गई यह मणि...
!!!
हमारी हैरानी की सीमा न थी!
मकरराज की घातक शक्तियां इस मणि से टकराकर नष्ट हो गईं!
मकरराज की शक्तियों को नष्ट करने वाली मणि साधारण नहीं हो सकती!
इस मणि को प्राप्त करना होगा।
मैंने मणि प्राप्त कर ली!
...तभी मकरराज ने कर दिया मुझ पर दूसरा वार...
अब नहीं बचेगा तू!
मकरराज का वार मुझ तक पहुंचा...
... और मुझसे टकराकर ...
फ्ऽऽ
... न केवल वापस लौटा...

... बल्कि कहर बन गया मकर सेना पर ...
उआsss
फ्रां३३३
आई ई ई...

... बहुत ही प्रलयंकारी साबित हुई वह मणि मकरराज व उसकी सेना पर ...

... वह लोग उस मणि की शक्तियों का सामना न कर पाए और भाग खड़े हुए ...

ोह। तभी ापने इसे देवता 5 मस्तक में थान दिया है!
जी हां, लेकिन इसे यहाँ मन्दिर में स्थापित करने का एक कारण और भी है। और वह कारण है इस मन्दिर की सुरक्षा का...

... आप तो जानते ही हैं कि हमारी इच्छा के बिना इस मन्दिर तक ब्रह्माण्ड की कोई भी शक्ति नहीं पहुंच सकती!

इसलिए यह मणि यहां पूरी तरह सुरक्षित रहेगी।

ड्राक्युला ने अपनी क्रोध से जलती आंखें खोलीं और गरज उठा-
अपनी मणि को पाने के लिए मैं पहुंचकर दिखाऊंगा उस मन्दिर में...

...चाहे इसके लिए मुझे सारी समुद्र नगरी को ही क्यों न नष्ट करना पड़े।
तुरन्त ही ड्राक्युला पाताललोक के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं को साथ लेकर समुद्र नगरी की तरफ रवाना हो गया।

उधर समुद्र नगरी का सम्राट समुद्रा उनके आगमन से बेखबर नहीं था।
कौन हैं ये?
किसी दूसरे लोक के वासी लगते हैं सम्राट!

सम्राट ने तुरन्त ही अपने रक्षकों को आदेश दिया
जाओ, जाकर उनसे इधर आने का कारण पूछो। अगर वे कोई गड़बड़ करें तो...

...समाप्त कर देना उनको।
जी आज्ञा सम्राट!
सम्राट सम्मुद्रा के रक्षकों ने...
...शीघ्र ही ड्राक्युला और उसके साथियों को जा घेरा।
अपना परिचय दो और यहां आने का कारण बताओ, वरना नष्ट कर दिया जायेगा तुम्हें।
परिचय जानना चाहते हो तुम मेरा! तो सुनो...
पाताल सम्राट ड्राक्युला कहते हैं मुझे। और मैं यहां तुम्हारे मन्दिर में रखी अपनी मणि वापस लेने आया हूं...
...और अगर मुझे अपनी मणि नहीं मिली तो तबाह कर डालूंगा मैं इस नगरी को।
ओह! इसका मतलब तुम हमारे शत्रु हो।

शत्रु नहीं, मौत बोलो! तुम सबकी मौत! हा..हा..हा..!
भच्चाक
उआsss
आक्रमण!
अगले पल वहां भयंकर जंग छिड़ गयी।
देखना साथियो, कोई बचना नहीं चाहिए!
मारो...मारो
इन खिलौनों को लेकर ड्राक्युला से लड़ने आये हो!
लो मैं तुम्हारे खिलौनों के साथ तुम्हें भी नष्ट कर देता हूं!
उआsss
पूरे समुद्र को तुम्हारे खून से लाल कर देंगे हम हा..हा..हा..!
उआsss
आsss
ड्राक्युला और उसके साथियों का कहर मौत बनकर टूट रहा था रक्षकों पर...

...जिसे अपनी आंखों से देख रहा था सम्राट समुद्रा।

ओह!

बहुत खतरनाक है यह ड्राक्युला। इससे निपटने मुझे खुद ही जाना होगा!

आज फिर एक बार वह चमत्कारी मणि हमारी सहायता करेगी।

तुरन्त ही सम्राट समुद्रा ने मन्दिर से मणि उठाई...

... और जा पहुंचा ड्राक्युला से मुकाबला करने।
रुक जा दुष्ट।
!!!

इसी मणि को लेने आया है ना तू, लेकिन अब यही मणि तेरी मौत का कारण बनेगी।

ऐसा नहीं होगा। उससे पहले ही मैं तुम्हें खत्म करके मणि प्राप्त कर लूंगा।

और तुम्हें खत्म करने के लिए मेरा यह छोटा सा प्रयास ही काफी होगा!
ड्राक्युला की आगे बढ़ी प्रलयंकारी शक्तियां...
...मणि के तेज से टकराकर नष्ट हो गईं।
अपना कमाल तो तूने दिखा दिया ड्राक्युला, अब इस मणि का कमाल भी देख।
आऽऽऽ
आह!
आई...ई...ई...!
ई ई ई...!
हाय!
मणि की किरणों के प्रभाव से ड्राक्युला के साथी...
...पलभर में ही मोम की भांति पिघलते चले गये।
उआऽऽऽ
उआऽऽऽ
ई... ई... ई...
पानी लाल होता चला गया समुद्र का—

जबकि सम्राट ने मणि का रुख ड्राक्युला की तरफ कर दिया था।

नहीं sss

अब तेरी बारी है!

मौत ड्राक्युला की ओर बढ़ी...

लेकिन उस तक पहुंच न सकी, क्योंकि उनके बीच आ गये थे।

मकर सैनिक!

भच्चाक

भच्चाक

आह!

आह!

!!!

और इन्हीं कुछ पलों में—

जान बचाना चाहते हो तो मेरे साथ आ जाओ।

कौन हो तुम ?

एक मित्र!

मित्र!

सोचने के लिए एक पल गंवाया ड्राक्युला ने...

...फिर उछलकर मकरराज के वाहन पर बैठ गया।

उसके बैठते ही तूफान की-सी गति से भागा मकरराज का वाहन—

वाह! तुम्हारा वाहन तो बहुत तेज भागता है।

फिर मणि को दुबारा मन्दिर में स्थापित करते हुए सम्राट समुद्रा सोच रहा था।

यहां मणि सुरक्षित है, फिर भी थोड़ा पहरा और बढ़ा देता हूं। वह दुष्ट दुबारा मणि प्राप्त करने की चेष्टा कर सकता है।
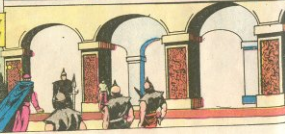
उधर मकर लोक में-
मित्र तुमने अभी तक बताया नहीं कि तुम कौन हो और उस मणि का क्या चक्कर है?
बताता हूं मित्र, सुनो...
फिर ड्राक्युला ने मकरराज को अपना हाथ कटने से लेकर पाताल का राजा बनने तक की सारी घटना बता दी और बोला-
यदि आज तुम न आते तो मैं जीवित नहीं बचता। मैं तुम्हारा जीवन भर आभारी रहूंगा।
ड्राक्युला का हाथ कटने की घटना के बारे में जानने के लिये पढ़ें- ड्राक्युला का प्रेतजाल
इसमें एहसान की कोई बात नहीं है मित्र! जो तुम्हारा शत्रु है, वह मेरा भी शत्रु है। और इसीलिए मैंने तुम्हारी मदद की है।
ओह! यानि तुम भी उस समुद्रनगरी को तबाह करना चाहते हो!
नहीं, तबाह करना नहीं, बल्कि जीतना चाहता हूं...
...और वहां अपना मकरलोक बसाना चाहता हूं...
लेकिन ऐसा तब तक नहीं हो सकता, जब तक वह मणि उसके पास है।
वह मणि अब ज्यादा दिन वहां नहीं रह सकती। उसे प्राप्त करके ही रहूंगा मैं!

सम्राट समुद्रा के रहते यह कार्य असंभव है। जैसे ही वह तुम्हें अपनी नगरी की ओर आते देखेगा, वह तुम्हारी मणि लेकर तुम्हारा मुकाबला करने आ पहुंचेगा।
यानि समुद्रा की नजरों से छिपकर उस मणि तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं है?
है एक रास्ता, जो उस मन्दिर के नीचे निकलता है। उस तरफ से जाने से किसी को पता भी नहीं चलेगा कि हम मंदिर की ओर बढ़ रहे हैं...
...लेकिन हम चाहकर भी वह रास्ता नहीं पकड़ सकते।
वह क्यों?
क्योंकि उस रास्ते पर मौत का ऐसा भयानक जाल फैला है कि वहां से कोई जीवित नहीं लौट सकता।
सम्राट समुद्रा ने वहां ऐसी जटिल रुकावटों का जाल फैला रखा है, जिन्हें पार करना असम्भव है।
ओह!
आज तक कोई भी उस रास्ते पर जाकर जीवित वापस नहीं लौटा है।

मुझे उस रास्ते का पता बताओ मित्र, मैं जाऊंगा उस रास्ते से अपनी मणि लेने।
क... क्या?
हां, ड्राक्युला जायेगा उस रास्ते पर और मौत को मात देकर अपनी मणि वापस लायेगा।
यदि ऐसी बात है तो तुम अकेले नहीं जाओगे, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।
अगले दिन—
इस चट्टान के नीचे से है वह गुप्त रास्ता, लेकिन इसे यहां से हटाना बहुत मुश्किल है।
ड्राक्युला के लिए कुछ मुश्किल नहीं है। पीछे हटो तुम सब।
सभी पीछे हट गये।
तब—
मेरे इस वार से चकनाचूर हो जायेगी यह चट्टान!

ड्राक्युला की प्रचण्ड अग्नि किरणें चट्टान से टकराईं और उसके परखच्चे उड़ गए।

बड़ाक

अद्भुत!

तुम्हारी शक्ति देखकर मुझे लग रहा है, हम शायद वह मणि प्राप्त कर सकें।

शायद नहीं, शत-प्रतिशत कहो मकरराज! शत-प्रतिशत!

आओ, अब अंदर चलें।

सभी उस गुप्त द्वार में प्रविष्ट हो गए।

मकरराज, तुम लोग मुझसे पीछे रहना, ताकि मेरे किसी मुसीबत में फंसने पर तुम मेरी मदद कर सको।

तुम्हारा सुझाव सही है मित्र!

चानक तीनों शैतानों के हाथों में
कट हुई विचित्र किरणोंवाली कांटे-
ार रस्सियां...

... जिससे जकड़ लिया उन्होंने ड्राक्युला को।
हर्रर्र
हर्रर्र
उओह्ह!

अब आजाद था ड्राक्युला।
अब यही रस्सियां इनकी मौत का कारण बनेंगी।
अगले पल ड्राक्युला ने वहां पड़ी एक चट्टान को रस्से में फंसाया।
और टूट पड़ा प्रचण्ड रूप से शैतानों पर—
सांय
धड़ाक
फ़चाक
fenzz
तभी—
पहले प्रयोग नहीं करना चाहता था इन मृत्यु किरणों को मैं, लेकि तेरी दुष्टता हद से ज्यादा बढ़ ग
ड्राक्युला से टकराने वाले हर प्राणी को मौत ही मिलती है!
चटाक
ई..ई..ई
बड़ाम
शूंsss

मूर्ख! तेरी इन किरणों का ड्राक्युला पर कोई असर नहीं होगा!
अब तू मरने के लिए तैयार हो जा!
अगले पल —
ई...ई...ई...!
अब तेरा भेजा निकालकर खाऊंगा मैं!
कड़
कड़
उसका सिर अपने हाथों में दबा लिया ड्राक्युला ने...
और किसी पके हुए तरबूज की भांति फोड़ डाला —
भच्च
हा...हा...हा...

मनोज कॉमिक्स
फिर अपने प्रिय काम में जुट गया ड्राक्युला।
और तीनों शैतानों का भक्षण करने के बाद—
अब आगे बढ़ना चाहिये मुझे!
अभी कुछ ही दूर बढ़ा था ड्राक्युला कि—
इतना विशाल अण्डा किसका हो सकता है!
जरूर इस अण्डे में कोई रहस्य छुपा है, मुझे सावधानी से आगे बढ़ना होगा।
फिर अचानक जैसे ही अण्डे पर एक जगह ड्रेक्युला का पांव पड़ा...
बड़ाक
खट
...मानो गजब हो गया

अगले पल उससे निकलने वाले भयंकर प्राणी ने रोंगटे खड़े कर दिये ड्राक्युला के।
क्रिंsss
उफ! इतना भयानक प्राणी!
बेहद तेजी से उसके खतरनाक पंजों से बचा ड्राक्युला।
क्रिंsss
सरर्र
ओह!
लेकिन वह भयंकर प्राणी भी पीछे न रहा। अगला वार करने के लिए वह तेजी से पलटा...
क्रिंsss
...लेकिन इस बार जैसे ही वह भयंकर प्राणी पास आया, ड्राक्युला उछलकर उसके पंजों से लिपट गया।
अगले क्षण—
खच्च

एक ही झटके में उस प्राणी का पेट चीर डाला था ड्राक्युला ने।
चर्र्र्र
क्रियांss
लहराकर नीचे आ गिरा उस प्राणी का मृत शरी
धप्प
जबकि ड्राक्युला...
...किसी कुशल नट की भान्ति कलाबाजियां खाता हुआ सकुशल धरती पर आ खड़ा हुआ
ड्राक्युला के पीछे आता मकरराज उसके कारनामे देख-देखकर खुश हो रहा था।
वाकई ड्राक्युला बेहद शक्तिशाली है। कितनी कुशलता से इन भयानक प्राणियों को मात दी है उसने।
फिर ड्राक्युला आगे रवाना हो गया।
अब मुझे पूरा विश्वास है कि वह मणि वापस प्राप्त कर लेगा।

इधर आगे बढ़ते ड्राक्युला के पावों के नीचे से अचानक जमीन हटी...
... और वह मुसीबत में पड़ गया।
ओह!
अब ड्राक्युला पारदर्शी ट्यूब रूपी मौत के मुंह में खड़ा था।
ओह! चारों तरफ तेजाब का समुन्दर है। यदि मैं यह ट्यूब तोड़ता हूं तो मेरी हड्डियां तक गल जाएंगी।
और इसकी दीवारें इतनी चिकनी हैं कि उपर चढ़ना असम्भव है।
आज मौत निश्चित है। आजाद होने का कोई रास्ता नहीं है। कुछ ही देर में यहां वायु खत्म हो जाएगी और मैं तड़प-तड़प कर मरुंगा।
तभी—
एक रास्ता है। इस ट्यूब के फर्श में गड्ढा करके यहां से बाहर निकला जा सकता है।

अगले पल ड्राक्युला इस काम में जुट गया।
शीघ्र ही ड्राक्युला मौत के मुंह से बाहर खड़ा था।
अब मुझे मकरराज के साथ आगे बढ़ना चाहिए।
कुछ ही क्षणों में मकरराज भी वहां पहुंच गया। फिर सब एक साथ आगे बढ़ने लगे।
अभी कितनी दूर और है समुद्र नगरी?
अभी तो हमने आधा रास्ता ही पार किया है ड्राक्युला।
यानि अभी मुसीबतें खत्म होने में देर है?
ड्राक्युला का सोचना सही था। सी मुश्किलें थीं उनकी राहों

...जिनमें से एक थी यह भयंकर भंवर।
जिसने उन्हें ले लिया अपने घेरे में।
ओह! हम भंवर में फंस गये।
बहुत भयंकर भंवर है ये, बचाओ अपने आपको।
सबने बचने का बहुत प्रयास किया।
ओह!
बचाओऽऽऽ
उफ!
लेकिन भंवर ने सभी को निगल लिया।
सबको निगलकर भंवर शांत हो गया।
लेकिन नीचे उस तालाब के तल में अभी भी हलचल मची हुई थी...
...जिसका कारण था वह विशाल जानवर...
...जिसके विशाल मुंह में समाते जा रहे थे सभी।
ओह! तो यह है भंवर पड़ने का मुख्य कारण!
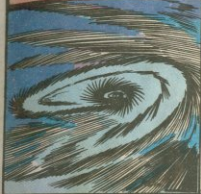
अपने आप को बचाने के लिए इसे मारना होगा।
ड्राक्युला के हाथ से फौरन किरणें निकलीं...
धड़ाक
...लेकिन उससे टकराकर बेकार हो गयीं।
तभी उस भयंकर जानवर ने ड्राक्युला पर कर दिया पूंछ का वार।
कोई साधारण शक्ति इस वार को हरगिज नहीं सह सकती थी।
मगर वह तो था पिशाच सम्राट ड्राक्युला
जो उस घातक वार को सहकर भी न केवल सम्भला था, बल्कि-
ड्राक्युला को समाप्त करना तेरे जैसों के वश का नहीं है...

...जबकि तुझे खत्म करना मेरे बायें हाथ का खेल है!
लेकिन उस जानवर की मोटी खाल से टकराकर वह अस्त्र भी बेकार हो गए!
ओह! यह तो बहुत शक्तिशाली है!
अब तो इसे खत्म करने के लिए इस पर पिशाच शक्ति का वार करना होगा!
दूसरे ही क्षण हुआ पिशाच शक्ति का जबरदस्त प्रहार।
जिसने जा घेरा उस विशाल जानवर को!
उस जानवर के तड़पने से जैसे तूफान आ गया वहां...
वांsss

जो शान्त हुआ एक धमाके के साथ!

इसी के साथ आज़ाद हो गये थे मकरराज व उसके साथी!

धन्यवाद ड्राक्युला! अगर तुम न होते तो हम तो गए थे काम से!

तुम ड्राक्युला के मित्र हो मकरराज! मेरे होते हुए कोई तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकता!

यह पुल यहां तालाब पर यूं ही नहीं बना हो सकता। अवश्य ही इसमें कोई रहस्य छुपा होगा।

तुम ठीक कहते हो ऐसा करते हैं, मैं आगे बढ़ता हूं। यदि कोई मुसीबत होगी तो सामने आ जायेगी।

धड़कते दिल से लकड़ी के तने पर पैर रखा ड्राक्युला ने।

कोई खतरा न पाकर –

आ जाओ! कोई खतरा नहीं है!

ड्राक्युला के पीछे सारे पुल पार करने लगे।

लेकिन जैसे ही वह तालाब के बीचों बीच पहुंचे।

कड़ाक

छपाक छपाक

पानी में गिरते ही वहां छिपे खतरे ने दबोच लिया उन्हें।

साथियो, मुकाबला करो इनका।

सारे बहुत बहादुरी के साथ उन भयानक सांपों का मुकाबला करने लगे।

खच्च

खच्चाक

फौंsss

मकड़ी के जाले को काटने आगे बढ़ा ड्राक्युला।

ठीक तभी-

धाड़

ओह!

जाने कहां से आकर गिरी ड्राक्युला के ऊपर कई मकड़ियां।

ले अपनी बहादुरी का इनाम!

कड़ाक

आज तेरा मांस खाएगा ड्राक्युला!

कड़ाक

सचमुच उस विशाल मकड़ी का भक्षण करने लग गया ड्राक्युला।

आहा! मकड़ी का मांस इतना स्वादिष्ट होगा, ये मैंने कभी न सोचा था!

दूसरी ओर मकरराज और उसके अन्य साथी मकड़ियों को समाप्त कर रहे थे।

त्पश्चात्-

आओ साथियो, अब प्रवेश करते हैं हम समुद्र नगरी में!

कुछ क्षणों बाद एक मन्दिर के प्रांगण में निकले हम सभी-

भड़ाक

भड़ाक

समुद्र नगरी के रक्षक दंग रह गए थे उन्हें देखकर।

ये तो शत्रु हैं।

खत्म कर दो इन्हें!

मगर उन्हें खत्म कर पाना इतना आसान कह था?

ड्राक्युला को खत्म नहीं कर पाओगे तुम!

आऽऽऽ

और ना ही मकरराज को।

मकरराज व उसके साथी कहर बनकर टूट पड़े थे समुद्र नगरी के सिपाहियों पर।

मकरराज, तुम इन लोगों को रोको, मैं मणि लेने मन्दिर में जाता हूं।

ठीक है।

ड्राक्युला मन्दिर की तरफ बढ़ गया।

मुझे इसकी सूचना तुरन्त ही सम्राट को देनी चाहिए।

मन्दिर में प्रवेश करते ही ड्राक्युला चौंक पड़ा

ओह! माण्डूका और रणकुम्भा तुम?

हां दुष्ट, हम शुरू से ही अदृश्य रूप से तेरा पीछा कर रहे हैं, ताकि वक्त आने पर तेरे दुष्ट कर्मों की सजा दी जा सके तुझे!
अच्छा हुआ जो तुम दोनों खुद मेरे सामने आ गये क्योंकि तुम दोनों को अपने हाथों से समाप्त करने की मेरी इच्छा...
...आज पूरी हो जायेगी!
तेरी यह इच्छा कभी पूरी नहीं होगी दुष्ट! यह अस्त्र जो तू हमारे हाथों में देख रहा है, हमारे कुल देवता के हैं।
आज इन्हीं से तेरी गर्दन काटकर देवता को बलि चढ़ाएंगे हम!
एक घमासान टकराव शुरू होने जा रहा था इधर...
जबकि उधर-
क्या कह रहे हो?
मैं सही कह रहा हूं! वह लोग मंदिर तक पहुंच गए हैं!
लेकिन कैसे?
उस गुप्त रास्ते से, जिसे हम अभेद्य समझते थे।

तुम फौरन सेना लेकर वहां पहुंचो, तब तक हम उन्हें रोकते हैं!
जो आज्ञा सम्राट!
अगले पल—
अगर ड्राक्युला ने मणि प्राप्त कर ली तो अनर्थ हो जायेगा!
उधर मकरराज व उसके साथी तबाही बरसा रहे थे रक्षक सैनिकों पर।
मकरलोक का एक-एक सैनिक तुम्हारे बीस-बीस रक्षक के बराबर है दुष्टो!
पूरी समुद्र नगरी को खत्म कर डालेंगे हम!
तभी—
तुम्हारा ये सपना कभी पूरा नहीं होगा दुष्ट मकरराज!
!!
हमारे देवता का यह प्रलयंकारी अस्त्र...
...मौत की बारिश बरसायेगा तेरे सैनिकों पर!
आऽऽऽ
सचमुच ठीक वैसा ही था जैसा समुद्रा ने
सर्र्र्र
आह!

आह!
मौत की यह बारिश तेरे सैनिकों...
तुझे मिट्टी में मिला देगी।
नहींsss
अगले पल मकरराज की चीखें पूरी समुद्र नगरी को गुंजाती चली गईं, अब हुई उस पर मौत की बारिश।
नहींsss
आsss
कुछ ही पलों बाद उसके जीवन के साथ उसकी चीखें भी शान्त हो गईं।
मकरराज खत्म हुआ! अब ड्राक्युला को देखना चाहिए मुझे।
उधर मन्दिर में ड्राक्युला और माण्ड्का व रणकुम्भा के बीच भयंकर युद्ध छिड़ा हुआ था।
यह अंगारों की बारिश तुझे जलाकर राख कर देगी ड्राक्युला!
ड्राक्युला के लिए यह आग की बारिश पानी की बारिश के समान है मूर्ख रणकुम्भा!
ले, अब मेरा वार संभाल!
कड़...कड़...कड़ाक

अगले पल वहां बारिश होने लगी जहरीले विषधर और बिच्छुओं की।

ओह!

उफ!

अपनी जान खतरे में देख दोनों एक साथ पुकार उठे–

रक्षा कीजिए कुल देवता!

अगले ही क्षण मानो चमत्कार

कड़ कड़ कड़

...आग की

में घिरते चले गये सांप व

और यही वह क्षण था, जब सम्राट समुद्रा ने वहां प्रवेश किया। सामने का दृश्य देख उसे सारा माजरा समझते देर न लगी।
ओह! उन दोनों के प्राण संकट में हैं। मुझे उनकी रक्षा करनी चाहिए।
अगले क्षण हवा में लहराया समुद्रा के हाथ में थमा पंचमुखी त्रिशूल...
सांय
...और जा धंसा ड्राक्युला के शरीर में —
आई..ई..ई..
इस वार ने शायद ड्राक्युला की शक्ति क्षीण कर दी थी, क्योंकि वह पुनः अपने वास्तविक आकार में आने लगा था।
आह!
आह! इस पंचमुखी त्रिशूल की शक्ति से मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है। अब मैं इन तीनों का एक साथ मुकाबला नहीं कर सकता!
किसी तरह इन्हें यहीं रोककर मुझे पिशाच मणि हासिल करनी चाहिए।
और इन्हें रोकेगी, मेरी पिशाच अग्नि
अगले पल वहां भड़क उठी भयंकर आग —
ओह!
उफ!
मेरी यह पिशाच अग्नि तुम्हें आगे नहीं बढ़ने देगी!
क्योंकि इसे केवल मैं ही बुझा सकता हूं। अब वह मणि प्राप्त करने से मुझे कोई नहीं रोक सकता।

इतना कहकर ड्राक्युला तेजी से मंदिर के अंदर की तरफ भाग खड़ा हुआ था।

हा हा हा। हा हा हा।

ओह!

उफ!

आग बुझाने का प्रयत्न किया सम्राट समुद्रा ने...

...लेकिन सफल न हुआ।

उफ! मेरा वर्षा वार भी असफल रहा। अब यह आग नहीं बुझ सकती।

अब क्या होगा?

खम्बा उखाड़कर अपने हाथ में थाम लिया उसने।
पिताजी। अब आप अपनी शक्ति से इस खम्बे को खोखला कर दीजिए।
कुछ न समझ में आते हुए भी खंबे को खोखला करने में जुट गये सम्राट माण्डूका।
कुछ ही क्षणों में खंबे में इतना बड़ा रास्ता बन गया था कि एक आदमी आसानी से उसमें से गुजर सके।
खोखले खम्बे को नीचे रख वह उसमें घुस गया।
पिताजी, आप इस खम्बे को आग में धकेल दीजिये।
ओह!
अब वे दोनों रणकुम्भा की योजना समझ चुके थे।
वाह! आग से पार होने का क्या नायाब तरीका खोजा है रणकुम्भा ने!
हमें गर्व है अपने पुत्र की बुद्धि पर।
अगले ही क्षण—
हे देवता! राजकुमार की रक्षा करना।
धधकती आग के बीच से होकर गुजरता खम्बा...
...सुरक्षित दूसरी ओर आ पहुंचा।
अगले पल—
धधकती आग पार कर चुका हूं मैं! अब इस खोखले खम्बे को वापस धकेल देता हूं!
उस खोखले खंबे को वापस धकेल अन्दर की तरफ भाग खड़ा हुआ रणकुम्भा।
मणि को प्राप्त न कर लिया हो ड्राक्युला ने।

इधर ड्राक्युला मणि के पास पहुंच चुका था।

हा... हा... हा...! अब सिर्फ हाथ बढ़ाने भर की देरी है, फिर यह मणि मेरी होगी।

मणि को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया ड्राक्युला ने, तभी रणकुम्भा द्वारा छोड़ी किरणें उससे टकराईं—

सांय

आsss

इस अवसर का भरपूर लाभ उठाया रणकुंभा ने—

मणि प्राप्त करनी होगी मुझे! इसी से अंत हो सकता है इसका!
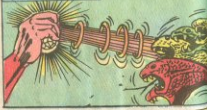
तभी-

तेरा वार विफल गया ड्राक्युला। अब अपनी मौत की तैयारी कर ले!

इसके साथ ही -

मणि की शक्ति किरणें धीरे-धीरे ड्राक्युला की तरफ बढ़ रही थीं।

नहींsss

मौत के घेरे में पहुंचकर चीख उठा था ड्राक्युला।

नहींsss

धीरे-धीरे वे किरणें ड्राक्युला के शरीर में समाने लगीं।

आहsss

कुछ क्षण बाद काला कोयला बना ड्राक्युला का शरीर नीचे जा गिरा।

धड़ाम

मौत ने अपने आगोश में ले लिया था उसे।

इतने पर भी बस नहीं किया था राजकुमार रणकुम्भा ने।

इसके शरीर को टुकड़े-टुकड़ों में विभाजित कर दूंगा मैं।

तभी-

ठहरो!

मैं जानता हूं ऐसी एक जगह। आइए मेरे साथ।

ड्राक्युला का शरीर उठाकर माण्डूका और रणकुम्भा सम्राट समुद्रा के साथ चल दिये।

काफी लम्बी यात्रा के पश्चात-
यह अजगरलोक है। यहां के सम्राट मेरे बहुत अच्छे मित्र हैं। हम इस दुष्ट का शरीर उनकी निगरानी में यहां रखवा देते हैं।

सम्राट समुद्रा ठीक कह रहे हैं पिताजी! अजगरलोक इसके लिए एकदम सुरक्षित है।
ठीक है।

फिर वे अजगर लोक के सम्राट के पास पहुंचे और उन्हें सारी बात बता दी। सारी बात सुनकर -
ठीक है मित्र! इस दुष्ट को मैं ऐसी जगह रखवा देता हूं, जहां सूर्य की किरणें भी नहीं पहुंच सकतीं।

कुछ देर बाद अजगर लोक के एक द्वीप पर।
यह जोंगिला द्वीप है मित्र। यहां से यह शैतान कभी आज़ाद नहीं हो पायेगा।

क्योंकि इस टापू की सुरक्षा हमारे राज्य की सबसे शक्तिशाली शक्तियां करेंगी।

ड्राक्युला के शरीर को जोंगिला द्वीप की गुफा में रखने के बाद-
धन्यवाद सम्राट!
मुझे आपकी दोस्ती पर गर्व है सम्राट माण्डूका!

ड्राक्युला को समाप्त करने का एक बार फिर धन्यवाद स्वीकार कीजिये पाताल सम्राट!

fenzz
इसमें धन्यवाद की कोई बात नहीं सम्राट। हमने तो ड्राक्युला को समाप्त करके अपने लोक के साथ साथ समस्त प्राणी जगत को ड्राक्युला के कहर से बचाया है।

अच्छा सम्राट! अब विदा।
विदा सम्राट! देवता ने चाहा तो फिर मिलेंगे।
फिर एक-दूसरे से विदा लेकर वे अपने अपने लोक की तरफ चल पड़े।

पीछे छोड़ गये सुनसान और वीरान जोंगिला टापू...
...जिसकी रक्षा कर रहे थे अजगर लोक के सबसे शक्तिशाली रक्षक।

क्योंकि इस टापू पर कैद था पिशाच सम्राट
ड्राक्युला।
* समाप्त *